प्रथम अध्याय

उषा प्रियंवदा का संक्षिप्त परिचय

प्रथम अध्याय

उषा प्रियंवदा का संक्षिप्त परिचय --

जीवनवृत्त --

मेरे शोध प्रबंध का विषय - ` उषा प्रियंवदा द्वारालिखित ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में चित्रित परिवार ` है। विषय को समझने के लिए केवल मात्र ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` या उसमें चित्रित परिवार का अध्ययन करना ही प्रर्याप्त नहीं होगा बल्कि जिस लेखिका के उपन्यास पर मेरा शोध प्रबन्ध का भवन खड़ा हो रहा है उसके बारे में भी जानना नितांत आवश्यक है।

उषा प्रियंवदाजी का जन्म २४ दिसंबर १९३१ में कानपूर में हुआ था। उषाजी को बचपन से ही साहित्य के प्रति रुचि थी। उन्होंने स्कूली दिनों में ही अपने शरतचंद्र के समूचे साहित्य को पढ डाला था, साथ ही गुरु प्रकाशचंद्र गुप्त, उपेन्द्रनाथ ` अश्क ` , ` निर्गुण ` आदि साहित्यकारों की कहानियाँ भी पढ ली थीं। उषा प्रियंवदाजी को साहित्य-सृजन की प्रेरणा ` श्रीपंतरायजी ` से मिलती रही। क्योंकि वे ` कहानी ` के संपादक थे और उनका इनके परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध था और उन्हीं के ही पथ-प्रदर्शन से प्रियंवदाजी साहित्य निर्मिती करती रही।

उषा प्रियंवदाजी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की और बाद में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। दिल्ली आकर लेडी श्रीराम कॉलेज में अंग्रेजी पढना शुरु किया। उसके बाद उषाजी ने फुलब्राइट पर अमरीकी साहित्य का अध्ययन करने के लिए अमरीका प्रस्थान किया

वहाँ उन्होंने ब्लूमिंगटन इण्डियाना में दो पोस्टल डॉक्टरल-स्टडी की और इसी समय में ही उषाजी ने वहाँ के भाषाविद श्री किम.विल्सन से विवाह कियाऔर आजकल अमरीका मेंविस्कासीन विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्षा के पद पर कार्य कर रही हैं। अमरीका में रहकर अमरीकी साहित्य पर शोधपूर्ण अध्ययन एंव अध्यापन के कारण उनका जीवनानुभव विस्तृत हुआ है। जो पाश्चात्य देशों के प्रवाहों से प्रत्यक्षता उन्हें प्राप्त हुआ है। उषा प्रियंवदाजी ने अमरीका जाकर पहले वर्षों में ही वहाँ के नये परिवेश, नयी पुस्तकें और नये विचारों से बहुत कुछ सीख लिया, उस साल की पहली कहानी ` बनवास ` है उसमें संकुचित दायरे में रहनेवाली भारतीय नारी के सांस्कृतिक संघर्षों की कहानी है।

उषाजी ने अंग्रेजी में भी कुछ कहानियाँ, कविताएँ लिखीं परन्तु उनके मन में अपनी मातृभाषा के प्रति होनेवाले लगाव ने उन्हें फिर हिन्दी की ओर खींच लिया और उन्हें यह विश्वास हो गया है -- ` हिन्दी ही मेरी भाषा है और यदि कुछ वर्थव्हाइल मुझसे लिखा जायेगा, तो हिन्दी में ही। ` [१] इस प्रकार अपने परिवेश और देश से कटकर विदेश में रहते हुए भी उषाजी भाषा और लेखन के माध्यम से भारत के साथ जुडी हुई है।

---

१ ` उषा प्रियंवदा ` ` भूमिका ` मेरी प्रिय कहानियाँ ` दिल्ली राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण १९७४, पृ.५।

व्यक्तित्व --

उषा प्रियंवदाजी का आधुनिक युग की कथा-लेखिकाओं में अग्रणी नाम है। उनकी संक्षिप्त जीवनी से उनका प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हमारे सामने आ जाता है। उषाजी ने अपने जीवनकाल में जो विपुल पठन किया, अनुभव किया चिन्तन किया उसका प्रतिबिम्ब उनके साहित्य में दिखाई देता है उनके समूचे साहित्य में भी आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास, अस्तित्व-बोध एवं अकेलेपन की भावना दृष्टिगोचर होती है। वह उनके व्यक्तित्व और परिवेश का ही प्रभाव है। इस बात को स्पष्ट करते हुए वे कहती है --` मेरे लिए चाहे पात्र विदेश में रहते हों, या भारत के किसी छोटे शहर में, चाहे वह समाजद्वारा थोपा गया सुषमा का अकेलापन हो या अपने आप ग्रहण किया हुआ राधिका का अजनबीपन प्रामाणिक है और लेखन के लिए उपयुक्त मेरे विचार में विदेशी वातावरण ने इस अकेलेपन और अजनबीपन को मुखर किया है, वैसे मैं स्वंय एक बहुत` प्राइवेट परसन हूँ, और गहरे मित्र बनाने में मुझे समय लगता है, शायद मेरे पात्रों के अकेलेपन में, मेरी इसी दृष्टि और प्रवृत्ति का प्रभाव आ जाता है।`[२]

उषा प्रियंवदाजी की पहली कहानी` लालचूनर` है जो` सरिता` पत्रिका में छपी थी। उसके बाद के तीन चार वर्षों में उषाजी ने अनेक कहानियाँ लिखीं परन्तु उन प्रारम्भिक कहानियों में उतनी गहराई नहीं थी। जितनी बाद की कहानियों में दिखायी देती है।` एक कोई दूसरा`,` कितना बडा झूठ `,`जिन्दगी और गुलाब के फूल ` कहानी संग्रह के बाद फिर उनके साहित्यसृजन का तीसरा दौर आरंभ हुआ। और एक बार फिर उनकी भावभूमि बदली, अनुभवों और अनुभूतियों का धरातल बदले ` कोई नहीं`` झूठा दर्पण `,` एक कोई दूसरा`

---

२ ` उषा प्रियंवदा ` - भूमिका - मेरी प्रिय कहानियाँ` राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७५, पृ.१०।

और ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उन दिनों की कृतियाँ है । उन वर्षों की अंतिम कहानी ` वापसी ` है । इस कहानी को उस साल को नयी कहानियों में से सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार मिला था । उसके बाद उन्होंने ` ट्रिप `, ` सम्बन्ध `, ` कितना बड़ा झूठ `, ` प्रतिध्वनियाँ `, ` मछलियाँ ` आदि अनेक कहानियों तथा ` रुकोगी नहीं .... राधिका ` । और ` शेष-यात्रा ` आदि दो उपन्यासों की रचना की । इनमें से अधिकांश कृत्तियों का सृजन विदेशी पृष्ठभूमि पर किया है । जिसमें विदेशी वातावरण सजीव हो उठा है ।

` उषा प्रियंवदाजी ` व्यक्ति की स्वांतत्रता और निजता में अधिक विश्वास करती है वे मानती है ` कि मानवमूल्यों में विकास की दृष्टि से मनुष्य का स्वतंत्र विकास अनिवार्य है । उसकी इच्छाओं पर कोई बन्धन न हो । `[3] अर्थात् उषा प्रियंवदाजी व्यक्तिवादी विचारधारा से प्रभावित है, जिसके परिणाम स्वरुप उनके साहित्य में व्यक्ति की कुण्ठा ,पीडा,संत्रास का ही चित्रण दिखाई देता है ।

उषा प्रियंवदाजी ने जो कथाचित्र प्रस्तुत किये है उनमें व्यक्ति की कुण्ठाओं, पीडाओं,अतृप्त आंकाक्षाओं आदि को समझाया है अर्थात् नारी होने पर भी सुख और स्वास्थ गार्हस्थ जीवन के चित्र उनकी लेखनी से अंकित नहीं हुए, यह आश्चर्य की बात है । इसका कारण यह है कि वर्तमान युग में वैयक्तिक भावनाओं को सर्वोपरी महत्व देने की जो लहर सी चल पड़ी है, वे इसमें बह गई है । फिर भी वर्तमान जीवन की समस्याओं को चित्रित करने में उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है । `[4]

---

३ ` सुरेश सिन्हा `` हिन्दी उपन्यास ` लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली द्वितीय संस्करण, १९७२, पृ.३६१ ।

४ ` उर्मिला गुप्ता `` स्वातंत्र्योत्तर कथा-लेखिकाएँ ` राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९६७, पृ.१५५ ।

उषा प्रियवंदाजी ने भारत तथा अमरीका दोनों जगह रहते हुए साहित्य सृजन किया है। परन्तु उन्हें लेखन के लिए भारतीय परिवेश जितना अनुकूल लगा, उतना अमरीकी परिवेश नहीं वे कहती है -- " मुझे अकसर ऐसा लगता है, कि जाने के बाद मुझे दो साल के बाद भारत लौट आना चाहिए था, उस समय जब मैंने यह निर्णय लिया था कि मै अमरिका मे रहूँ और वहाँ पढाऊँ .... तब मैंने अपना स्वरुप इतना नहीं पहचाना था, साहित्यकार मेरे अन्दर इतना प्रबल है कि बीस साल तक न खाने के बाद भी नहीं मर पायेगा, वहाँ का माहौल मेरे साहित्यकार के इतना सक्रिय नहीं कर पाया।" [५]

इसका महत्वपूर्ण कारण यह है, कि उषा प्रियंवदाजी का मन मूलत: भारतीय है। किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी जन्मभूमि के प्रति लगाव होना स्वाभाविक है और उषाजी अत्यंत संवेदनशील नारी हैं। अत: उनके मन का अपनी जन्मभूमि भारत तथा भारतीय बंधुओं की ओर ही हमेशा झुकाव रहा है। यही कारण है कि अमेरिका में रहते हुए भी उन्होंने वहाँ की (विदेशी) औरत को अपने साहित्य का विषाय न बनाकर वहाँ की भारतीय नारी की ही उलझन, उसके संक्रमण और मन को ही अपने साहित्य का विषाय बनाकर काफी लिख डाला। इस सन्दर्भ में वह कहती हैं .... मैं उनकी (विदेशियों की) जिन्दगी से बहुत धुली-मिली हूँ, मगर मुझे लगता है, कि वहाँ जो उखड़े हुए लोग हैं .... जो भारतीय यहाँ से वहाँ आरोपित कर दिये गये हैं ... उसको मेरा मन ज्यादा बाँधता है ... मेरी दृष्टि उसको ज्यादा पकड़ती है।" [६]

सारांश रुप में हम कह सकते हैं कि अपने देश से दूर विदेश में रहते हुए भी प्रियंवदाजी को भाव-भावनायें भारत तथा भारतीयता के प्रति प्रामाणिक रही है। अपने संदर्भ से कटकर दूर विदेश में रहते हुए भी वह अपने लेखन और

---

५ ` उषा प्रियंवदा ` से अवधनारायण मुदगल की लम्बी बातचित ` ` सारिका ` (प्रथम पाक्षिक) १५ जुलाई १९८४, पृ.५६।

६ उषा प्रियंवदा ` से अवधनारायण मुदगल की लम्बी बातचीत ` सारिका ` (प्रथम पाक्षिक) १५ जुलाई १९८४ , पृ.५६।

भाषा के माध्यम से भारत के साथ जुड़ी हुई हैं। उनके व्यक्तित्व तथा विचारों का प्रभाव उनकी साहित्यिक कृतियों पर भी होता है। उषाजी के समूचे साहित्य में भी जो एक कटेपन तथा अजनबीपन की भावना दृष्टिगोचर होती है, वह उनके व्यक्तित्व और परिवेश का ही प्रभाव है।

अर्थात उषा प्रियंवदाजी आधुनिक युग की लेखिकाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उन्होंने अपने साहित्य में नारी जीवन के विविध रंगों, आयामों का उद्घाटन किया है। साथ ही आधुनिक जीवन की ऊब, घुटन, संत्रास, छटपटाहट अजनबीपन और अकेलेपन की स्थिति को अंकित किया है और फिर भी परिवार की महत्वपूर्ण इकाईयाँ-व्यक्ति, समाज, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध आदि का परिवर्तित पारिवारिक मान्यताओं के संदर्भ में जिस साहस और स्वाभाविकता से चित्रण किया है, वह निसंदेह प्रशंसनीय है। साहित्यकार के व्यक्तित्व तथा विचारों का प्रभाव उनकी साहित्यिक कृतियों पर भी होता है। इसलिए उषाजी के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय जानना आवश्यक है।

कृतित्व --

उषा प्रियवंदाजी ने अपनी सशक्त लेखनी द्वारा स्त्री-पुरुष के टूटते संबंधों, परिवार की परिवर्तित परिस्थितियों और आधुनिक सभ्य समाज के बदलते मूल्यों का परिवार का चित्रण अत्यंत सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी कुछ कहानियाँ भारतीय परिवेश में लिखी गई तो कुछ अन्य युरोपिय परिवेश में लिखी गई है। इसलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए प्रमुख कहानियाँ और उपन्यास का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है --

उषाजी के प्रमुख कहानी - संग्रह ---

(१) जिन्दगी और गुलाब के फूल --

उषा प्रियंवदाजी का यह प्रथम महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है। इस कहानी में बारह कहानियाँ संकलित है -- पैरम्बुलेटर, मोहबन्ध, जात, छुट्टी का दिन, कच्चे-धागे, पूर्ति, कटीली छाँह, दो अँधेरे, चाँद चलता रहा, दृष्टि-दोष, वापसी, जिन्दगी

और गुलाब के फूल आदि । ` जिन्दगी और गुलाब के फूल ` कहानी व्यक्ति अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक कल्पनाएँ करता है, जो गुलाब के फूल की भाँति सुन्दर और सरल होती है, किन्तु प्राय: जीवन के यथार्थ की कठोर शिला से टकराकर वे चूरचूर हो जाती हैं और व्यक्ति पीडा से सिसकर रह जाता है । इसी ही कल्पना पर यथार्थ की विजय को दिखाया गया है । और अर्थ की प्रमुखता बेरोजगारी की समस्या, घुटन, असफलता और मजबूरी का मर्म-स्पर्शी चित्रण दिखाया गया है । जैसे ` पैरेम्बुलेटर ` कहानी की नायिका कालिन्दी, अपने भावी शिशु के लिए सुन्दर पैरेम्बुलेटर को उमंग सहित खरीदती है किन्तु उसकी यह आकांक्षा पूरी नहीं हो पाती, क्योंकि शिशु का जन्म होने पर धनाभाव के कारण उसकी दवाईयों आदि के लिए उसे ` पैरम्बुलेटर ` को बेचना पडता है । ` मोहबन्ध ` की अचला । ` कच्चे-धागे ` में प्रमुख कुंतल, ` दो अँधेरे ` की सुमित्रा ` दृष्टि-दोष ` में मधुर आदि पात्र प्रेम की सफलता के मधुर स्वप्न देखते हैं, किन्तु प्रेमी अथवा प्रेमिका की अनिच्छा अथवा प्रेमिका अपनी विवशताओं के कारण उनकी आकांक्षाएँ पूरी नहीं हो पाती । ` जाल `, ` कँटीली छाँह ` में भी पात्रों की असफल कल्पनाओं और तज्जनित कुण्ठाओं के चित्र अंकित किये गये हैं । ` वापसी ` कहानी में उषाजी ने संबंधों का टूटना और रुखापन आधुनिक जीवन की देन । कहानी के नायक गजाधर बाबू नाम्क रिटायर्ड अफसर के अपने भरे-पूरे परिवार में उमंग से आने लेकिन वहाँ अपने असंगत और अजनबी होने के एहसास के कारण निराश वापस लौटने की कहानी है । ` छूट्टी का दिन ` कहानी में नायिका माया के दिनचर्या के द्वारा नौकरी के कारण अपने परिवार से दूर रहनेवाली युवती के अकेलेपन और निरुद्देश का चित्रण किया है । और ` पूर्ति ` , ` चाँद चलता रहा ` कहानियों में जीवन में होनेवाले कुछ आकस्मित संयोग , व्यक्ति की जीवनदशा को आमूल परिवर्तित कर देते हैं ।

आज की भारतीय नारी प्राचीन नारी की भाँति त्याग अथवा तप का जीवन व्यतीत न करके व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सर्वाधिक आकांक्षा रखती है । इसीलिए ` पूर्ति ` की तारा और ` दो अँधेरे ` कहानी की सुमित्रा आर्थिक, दृष्टि

से आत्मनिर्भर बन कर यह मानती है कि अब उन्हें किसी पुरुष के आश्रम में रहने की आवश्यकता नहीं। परन्तु उस स्थिति में भी प्रसन्न नहीं है, वह अपने मन में रिक्तता और अकेलापन का अनुभव करती है, दूसरी ओर विवाहित नारियों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। `दो अँधेरी` की कौशाल्या और `दृष्टि-दोष` की चन्द्रा विवाह करके भी इसलिए प्रसन्न नहीं रह पाती कि पुरुष के सुख के लिए अपनी इच्छाओं का बलिदान उनके मन में क्षोभ, कुण्ठा, पीड़ा और हीन भावना को जन्म देता है।

(२) कितना बड़ा झूठ --

उषा प्रियंवदाजी का यह दूसरा कहानी संग्रह है। इसमें `सम्बन्ध, प्रतिध्वनियाँ, कितना बड़ा झूठ, ट्रिप, नींद, सुरंग, स्वीकृति, मछलियाँ आदि आठ कहानियों को स्थान मिला है।

इस संग्रह की `प्रतिध्वनियाँ` कहानी में नायिका वसू को अपने पति के अत्यधिक प्यार से शिकायत है, `कितना बड़ा झूठ` कहानी की नायिका किरन को अपने पति से किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं है, फिर भी वह शारीरिक तुष्टि के लिए मैक्स से विवाह बाह्य सम्बन्ध रखती है। `ट्रिप` कहानी में नायिका को पति से रोमांस के कमी की शिकायत है। `नींद` तथा `सुरंग` में वर्तमान जीवन के अकेलेपन तथा अजनबीपन के अत्यधिक एहसास के परिणाम स्वरूप व्यक्ति के मन में उत्पन्न भय तथा उससे मुक्ति पाने की छटपटाहट को चित्रित किया है। `स्वीकृति` कहानी की जया पति के द्वारा उसकी भावनाओं और इच्छाओं को ख्याल न रखने से नाराज है। अत: वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अवैध आचरण करती है। और `मछलियाँ` कहानी में प्रेम की असफलता से उत्पन्न ईर्ष्या, द्वेष आदि भावनाओं का अंकन कियाहै।

इस प्रकार इन कहानियों की नारी ने वैचारिक और जीवन पध्दति के स्तर पर अपने को विदेशी परिवेश में यदि ढाल भी नहीं लिया है, तो किसी न किसी सीमा तक अपने अनुरूप बना लिया है।

(३) ` एक कोई दूसरा ` --

उषा प्रियंवदाजी का यह तीसरा कहानी संग्रह है। जिसमें ` एक कोई दूसरा ` , ` झूठा दर्पण `, ` कोई नहीं, सागर पार का संगीत, पिघलती हुई बर्फ `, ` चाँदनी में बर्फ पर , ` टूटे हुए ` आदि सात कहानियाँ है। इस कहानी संग्रह का प्रमुख विषय स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के बहुविध आयामों तथा प्रेम के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित है। जैसे -- ` एक कोई दूसरा ` कहानी में गुरु और शिष्या के बीच होनेवाले अनाम सम्बन्धों द्वारा प्रेम के उच्चतम रूप का दिग्दर्शन कराया है। तो ` झूठा दर्पण ` कहानी में नायिका अमृता के मन में प्रेम और विवाह के प्रति होनेवाली गलतफहमी तथाउलझन दिखाकर अंत में यथार्थ के धरातल पर उसका सुझाव देकर विवाह का समर्थन किया है। ` कोई नहीं ` कहानी में प्रेम के असफल हो जाने के कारण नायिका नमिता, के नीरस एकाकी जीवन का चित्रण किया है।और उषाजी ने अन्य कहानियों की रचना विदेशी पार्श्वभूमि पर की गई है, जो भारतीय मन और विदेशी परिस्थितियों का द्वन्द्व सामने रखती है -- ` सागर पार का संगीत ` नायिका देवयानी में एकाकीपन कीभावना इतनी तीव्र होती है कि उससे मुक्ति पाने के लिए वह आत्महत्या करने को उद्यत होती है। ` चाँदनी में बर्फ पर ` में हेमन्त जिसका आंतरराष्ट्रीय प्रेमविवाह तथाउसकी दु:खद परिणति को दिखाया है। और ` पिघलती हुई बर्फ ` में अक्षय को असफल प्रेम से उत्पन्न घोर निराशा, ईर्ष्या,द्वेष के आवेश में किये गये अपराध की पीडा और पश्चाताप की भावना का अंकन किया है। तथा ` टूटे हुए ` कहानी में एबनार्मल पुत्र के जन्म की घटना से टूटे हुए दाम्पत्ति की मानसिक दशा का चित्रण किया है।

अर्थात् आधुनिक जीवन की बदलती मान्यताओं की सार्थकता से चित्रण उषा प्रियंवदाजी ने इस कहानी-संग्रह में किया है।

उपन्यास --

उषा प्रियंवदाजी ने जहाँ अनेक कहानियाँ लिखी है वही उन्होंने उपन्यास भी लिखे है। उनके उपन्यासों का परिचय निम्नलिखित प्रकार से है --

(१) 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' -- रचना (१९६०) --

उषा प्रियवंदा का यह पहला उपन्यास है, जिसमें एक भारतीय नारी की सामाजिक,आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बडा मार्मिक चित्रण किया है।

उपन्यास की नायिका 'सुषमा' एक सुन्दर निम्नमध्यवर्गीय परिवार की शिक्षित युवती है वह कालेज में एक महत्वपूर्ण पद को सम्हाले हुए है,किन्तु अकेलेपन की अनुभूति उसे व्यथित करती है। सुषमा के चारों तरफ दीवारें है, दायित्व की कुण्ठा की,अपने पद की गरिमा की और परिवार की। पारिवारिक दायित्व के कारण यह विवाह नहीं करती उसके सूनेपन का साथी बनकर नील उसके जीवन में प्रवेश करता है। उसके मन और शरीर में एक नयी चेतना का संचार होने लगता है। सुषमा नील से विवाह इसलिए नहीं करना चाहती कि वह उससे वय में बडी है और नील उसे किसी दिन भी छोड सकता है। इसके अलावा पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ से दबी सुषमा चाहकर भी नील से विवाह नहीं कर पाती। न सामाजिक दायित्व से अपने को मुक्त कर पाती। वस्तुत: सुषमा रुढिवादी नारी है उषाजी ने उसे त्यागमयी नारी के रूप में चित्रित किया है उसे आत्म-पीडन पसंद है। सुषमा भावना के अधीन होकर नील को दरवाजे से लौटा देती है। और पचपन खम्भों से घिरी अपनी चहारदीवारी में लौट जाती है।

(२) रुकोगी नहीं .... राधिका - (रचना १९६७) --

यह उषा प्रियवंदाजी का दूसरा उपन्यास है। 'रुकोगी नहीं .....

राधिका ` उपन्यास में उषा प्रियंवदाजी ने भारतीय नारी के मानसिक द्वन्द्व का यथार्थ चित्रण किया है। यह उपन्यास व्यक्ति केन्द्रित उपन्यास है और सपनों और संस्कारों में जीती हुई नारी अपने व्यक्तिगत प्यार और भावना के स्तर पर जिन्दगी को समझाना चाहती है। यही (ही) चित्रित किया है।

` राधिका` उपन्यास की नायिका एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार की शिक्षित युवती है। राधिका के बचपनमें ही उसकी माँ का स्वर्गवास हुआ है। इसलिए पिता के अत्यधिक संपर्क के कारण राधिका के मन में उनके प्रति असाधारण लगाव रहता है। परन्तु राधिका के पिता अठारह वर्षों एकाकी जीवन व्यतीत करने के पश्चात विधा नामक एक सुशिक्षित अध्यापिका से दूसरा विवाह करते हैं। राधिका इसे सहन नहीं कर सकती (इसी संघर्षमय क्षण में राधिका का परिचय एक विदेशी पत्रकार डैनियल पिटरसन के साथ हो जाता है और राधिका उसके साथ अमरीका चली जाती है। लेकिन एक साल की अवधि मेंही उन दोनों के सम्बन्धों में तनाव पैदा हो जाता है। डेन उसे अकेला छोड देता है। (इसी) दिनों राधिका के विचारों में परिपक्वता आती है। वह सोचती है कि उसने अपने पापा के साथ बडा अन्याय किया है। उनसे सम्पूर्ण एकाग्रता की कामना करके उसने भूल की थी। शिक्षा समाप्त कर अपने देश और परिवार के लगाव से वह स्वदेश वापस आती है।

राधिका पुराने सम्बन्धों को पाने के लिए व्याकुल हो उठती है बहुत प्रयत्न करने पर भी पुराने सम्बन्धों निभा नहीं पाती और दिल्ली चली जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में एक तरफ पिता और पुत्री में अनुराग का तनाव है, दूसरी तरफ राधिका के मनीश व अक्षय के बीच डोलने की स्थिति है, अन्त में राधिका पिता के साथ रहने में अस्वीकार कर देती है और मनीश के साथ देश भ्रमण करने निकल जाती है।

उषा प्रियंवदाजी ने राधिका के माध्यम से आज की नारी की परंपरागत मूल्य आधुनिक मूल्यों के संघर्ष से उत्पन्न दुविधा मानस्थिति तथा उलझनों को अभिव्यक्त किया है। ` नारी के बदलते हुए पारिवारिक सामाजिक उत्तरदायित्वों और आर्थिक कठिनाइयों के बीच जूझते हुए व्यक्तित्व को प्रियम्वदाजी ने

`राधिका` नाम दिया है। `राधिका` का ही एक रुप `सुछामा` है। `पचपनखम्मे लाल दीवारें` की होस्टल वार्डन।` ७

सारांश रुप में उछाजी ने इस उपन्यास में भारतीय रुढ़ि और पाश्चात्य सभ्यता के विरोधाभास से उत्पन्न राधिका के मानसिक संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है। राधिका न पाश्चात्य परिवेश में अपने को जोड पाती है और न भारत में चैन पाती है। दोनों जगह वह अपने को असंगत और अजनबी पाती है। इस अजनबीपन के बारे में कहा गया है --` पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में अपने अजनबी होने के आतंक बोध से घबराकर पूर्व में पुन: लौट आयी शिक्षिता और स्वतंत्र नारी में एक दूसरे किस्म के अजनबीपन से साक्षात्कार किया है। यह अजनबीपन पश्चिमी की अनुभूति से कहीं अधिक गहरा और सच्चा है। ८

(३) शेषायात्रा --

उछाजी का अत्यधिक महत्वपूर्ण तीसरा उपन्यास `शेषायात्रा` है। जिसकी रचना विदेशी पृष्ठभूमि पर की गई है। उसमें प्रियंवदाजी ने उपन्यास में एक ऐसी नारी का चित्रण कियाहै कि जो पति द्वारात्याग दिये जाने पर भी टूटती नहीं बल्कि साहस,मेहनत तथा कठोर जीवन संघर्ष से अपनी दारुण स्थिति को बदलकर एक नयी जिन्दगी के निर्माण में सफल होती है और यही तो है `शेषायात्रा` उपन्यास की प्रमुख विशेषता। यह उपन्यास दो भागों में विभाजित किया है जैसे पहले भाग में उपन्यास की नायिका `अनुका` के प्रारम्भिक जीवन से लेकर तलाक मिलने तक की घटनाओं का चित्रण तो दूसरे भाग में तलाक शुदा नारी अनुका के दूसरे नये जीवन का प्रारंभ और अंत उसमें अपने

---

७ `धनश्याम` मधूप` हिन्दी लघुउपन्यास - राधाकृष्ण प्रकाशन,१९७१ अन्सारी रोड, दरियागंज दिल्ली -६, पृ.१८१।

८ `विद्याशंकरराय` - आधुनिक के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास - पृ. २४४, उद्धृत आधुनिक ,हिन्दी उपन्यास और अजनबीपन,पृ.१३५।

पूर्व जीवन के सभी पाशों से मुक्त स्वतन्त्र, आत्मविश्वास,आत्मनिर्भर नारी के रुप में अनु का चित्रण हुआ है।

` अनु उपन्यास की प्रमुख नायिका है जो अनाथ है, इसी कारण उसकी परवरिश उसके मामामामियाँ करती है और वहीं ही परवरिश में वह बडी होती है। अनु के मामा-मामियाँ परंपरागत रुढि की होने कारण अनु पर ही वही संस्कार होते है। अनु उनके आश्रय में रहते हुए अपने स्कूल की पढाई पूरी करके कालेज जाने लगती है तभी कुछ दिनोपरान्त उसकी शादी डॉ.प्रणवकुमार से होती है। प्रणव अमरीका में डॉक्टर। इसलिए शादी के बाद अनु को प्रणव अमरीका ले चला जाता है। उनकी आरम्भिक जिन्दगी सैर-आराम में गुजरती है। विदेश में घर-परिवेश, रहन-सहन,खान-पान आदि में बडी मुश्किल से अनु अपने को सम्भाल लेती है। वहाँ के वातावरण में घुलमिल जाती है। प्रणव के गुण तथा अनु की सुन्दरता और भोलापन सभी को प्रभावित करता है। इसी कारण मित्र मण्डलियों में वे ` गोल्डन कपल ` कहकर पुकारे जाते है। अनु को अपनी जिन्दगी बहुत ही अच्छी लगती है। अपने को वह बहुत सुखी समझाती है, क्योंकि उसे किसी बात की कमी नहीं है, पैसा, इज्जत, शोहरत, पति का प्यार सब कुछ उसके पास है।

परन्तु कुछ ही दिनों के बाद प्रणव का परिचय न्यूयार्क के एक टी.वी. स्टेशन के प्रोग्राम की प्रोड्युसर चन्द्रिकाराणा से हो जाता है। उसके व्यक्तित्व के प्रभाव से प्रणव उनकी ओर आकर्षित होता है और अनु को कुछ ही दिनों में प्रणव त्याग देता है। भारतीय संस्कारों में पत्नी अनु इस आकस्मिक झटके को सहन नहीं कर पाती। उसी वक्त अनु की सहेली दिषा उसे धीरज और स्वंयस्वतन्त्र, आत्मनिर्भर होकर नयी जिन्दगी आरम्भ कर देती और अनु से कहती है -- ` अक्सर हम जिन्दगी के ऐसे ठिकाने पर आ खडे होते है कि मालूम नहीं होता किस तरफ मुडे। इधर भी जा सकते है, उधर भी। हर हालत में तुम्हें

अपने को थोड़ा तो बदलना होगा। तुम्हें अपने को कुछ तो ढालना ही होगा, अपनी जिन्दगीयों गढ़नी होगी कि अगर प्रणव आजायें तो वाह .. वाह ...न आये तो भी.... ।[१९] परन्तु अनु अपने परम्परागत संस्कारों के कारण वह आशा करती है कि आखिर प्रणव पास आयेगा और फिर सभी पूर्ववत हो जायेगा । लेकिन प्रणव तलाक देता है उसी समय उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है ।

परिणाम स्वरुप उसकी इस स्थिति को पागलपन का दौर समझाकर उसे मेन्टल अस्पताल में भर्ती कराया जाता है अनेक प्रयत्नों के बावजूद प्रणव को पाने में असमर्थ अनु अपनी नयी जिन्दगी आरम्भ करती है। एकाकी, तलाक, शुदा नारी को यातनाएँ भुगतनी पड़ती है उन सबको दृढ़तापूर्वक सामनाकर वह डॉक्टर बनती है । और दिव्या के भाई दीपांकर के साथ पुनर्विवाह करती है । विवाह के पश्चात कुछ ही दिनों में वह एक बच्ची को भी जन्म देती है । अनु का जीवन अब सुख से परिपूर्ण हो जाता है । करिअर-बच्चा समझदार, पति उसके पास सबकुछ है । अपने इस सुख की तृप्ति में वह अपने अतीत की कड़वाहट भूल जाती है ।

इस उपन्यास में उषाजी ने नायिका 'अनु' के माध्यम से भारतीय नारी को सभी परम्परागत बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र, आत्मनिर्भर बनकर स्वाभिमान के साथ जीने का संदेश दिया है । अनु के रुप में भारतीय नारी की भाव-भावनाओं के अन्तर्द्वंद्व का चित्रण मार्मिक बन पड़ा है । साथ ही इसमें स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के सन्दर्भ में परंपरागत भारतीय और पाश्चात्य मूल्यों का संघर्ष भी दिखाया गया है ।

इस प्रकार उषा प्रियंवदाजी की नारियाँ विदेशी परिवेश में भारतीय नारी के जागृत व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है । सारांश में कहा जा सकता है

---

१९ 'उषा प्रियंवदा - शेषायात्रा - राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९८४ - दिल्ली - पृ.७६ ।

` उषा प्रियंवदाजी के चरित्र स्वाभाविक आकांक्षाओं और आवश्यकताओं वाले लोग है। रोज के आर्थिक और आपसी सम्बन्धों के बीच वे जीवन को लेकर कोई बुनियादी सवाल नहीं उठाते। वे ज्यादातर -` टाईप` चरित्रों और परिस्थितियों के द्वारा एक विशेष संवेदना को प्रसार-सा देती लगती है।` [१०]

निष्कर्ष --

उषा प्रियंवदा की सभी कहानियाँ और उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात्य यही निष्कर्ष निकलता है कि उषा प्रियवंदाजी ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में परिवार में होनेवाली क्रियाकलापों और दु:ख सुखों को बहुत ही सहजता और स्वाभाविकतासे दिखाया है। उनके पात्र मध्यमवर्गीय परिवार है -- कुछ पात्र ऐसे ही है जो पाश्चात्य संस्कृति से आकर्षित होकर उसे अपनाते है पर भारतीय संस्कारों को भी वह छोड नहीं पाती इसप्रकार दुविधा के जीवन में वह जीते चले जाते है।

उषा प्रियंवदाजी का ` पचपन खम्भे लाल दीवारे ` उपन्यास की ` सुषमा` जहाँ परिवार के उत्तरदायित्वों के बीच पिसती हुई` नील` को एक तरह से त्याग देती है वही से` रुकोगी नहीं ... राधिका` उपन्यास की ` राधिका` की एक यात्रा,जिसे खोज भी कहा जा सकता है, प्रारम्भ होती है। यह यात्रा डेनियल पीटरसन और अक्षय से होती हुई मनीश पर आकर रुकती है। और ` शेषायात्रा` उपन्यास में अनु की भाव-भावनाओं के साथ जीने का संदेश दिया है।

---

१० देवीशंकर अवस्थी - विवेक के रंग - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण - १९६५, पृ.३७९।